राजकीय संग्रहालय 'झालावाड़' की सौर प्रतिमाएं

डॉ. अनिता सुराणा,

व्याख्याता (इतिहास), आर. एल. साहरिया राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर)

झालावाड़ के निकटवर्ती क्षेत्रों, काकूनी, चन्द्रभागा, झालरापाटन, गंगधार आदि से प्राप्त सौर प्रतिमाएँ राजकीय संग्रहालय, झालावाड़ में संग्रहीत की गई हैं। इनमें आसनस्थ सूर्य, स्थानक सूर्य के अतिरिक्त सूर्य के संयुक्त अन्य देवों की संपृक्त प्रतिमाएँ यथा सूर्यनारायण, मार्तण्डभैरव, हरिहरमार्तण्ड पितामह आदि बहुत महत्वपूर्ण हैं।

इन प्रतिमाओं में काकूनी से प्राप्त 11वीं षताब्दी ई. की एक प्रतिमा[1] उल्लेखनीय है जो लाल पत्थर से निर्मित है। कमलासन पर स्थानक 'देव' की यह पारदर्षी प्रतिमा लगभग 4 फीट ऊंची है। मूर्तियों का पारदर्षी होना हाड़ौती मूतिषिल्प की विषिष्टता है। इस षैली में निर्मित मूर्तियों के अवयवों के कटावों में से आरपार देखा जा सकता है। सूर्य–प्रतिमा की भुजाएँ खण्डित हो चुकी हैं। पैरों में लम्बे जूते हैं। मुकुट, कुण्डल, कवच, मेखला एवं उत्तरीय से सज्जित सूर्य देव ने जनेऊ धारण कर रखी है। मस्तक–पार्ष्व में कमल पंखुडियों से सज्जित आभामण्डल है। चरणों के समीप अनुचर दण्डी, पिंगल तथा सूर्य पत्नी राज्ञी एवं निक्षुभा अंकित है। इनके ऊपर ष्षरसंधान किये सूर्य–पत्नियॉ ऊषा –प्रत्यूषा प्रदर्षित है। मूर्ति फलक के षीर्ष भाग में दाहिने कमलासन पर आरूढ़ हरिहरमार्तण्ड अंकित है। फलक का बायां भाग खण्डित है। गुप्तोत्तर कालीन सूर्य प्रतिमाओं में स्थानक सूर्य प्रतिमाओं का आधिक्य है। सम्भवतः विदेषी प्रभाव से मुक्त करने के लिये ही इस काल में प्रतिमाओं को प्रायः खडी मुद्रा में अंकित किया गया है। ज्ञातव्य है कि विदेषी प्रभाव के अन्तर्गत प्रतिमाओं को प्रायः आसनस्थ मुद्रा में निर्मित किया गया है।[2] विष्णुधर्मोत्तर पुराण में सूर्य के दोनों ओर उसके अनुचरों, पिंगल को लेखनी एवं पत्र तथा दण्डी को भाला लिए हुए प्रस्तुत करने का विधान है।[3] प्रायः स्वीकार किया जाता है कि सूर्य के इन अनुचरों का मूल ईरानी है। भारत में ईरानी सूर्य पूजकों के माध्यम से वे भारतीय सूर्य परिवार में सम्मिलित हो गये। हाड़ौती अंचल से प्राप्त सूर्य प्रतिमाएँ भी षास्त्रोक्त विधान के अनुसार ही निर्मित की गई हैं। ऐसी ही एक अन्य प्रतिमा चन्द्रभागा से प्राप्त हुई है जो अब 'संग्रहालय' में सुरक्षित है।[4] 8वीं षताब्दी ई0 की काले पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा में सूर्य देव स्थानक है। कमलधारी सर्वाभरण विभूषित देवता के चरण युगल लम्बे जूतों से आवृत है। चरणों के मध्य भूदेवी–महाष्वेता अंकित है। देव –चरणों के समीप अनुचर दण्डी एवं पिंगल है तथा सूर्य–मस्तक के समीप ताख में हरिहरपितामह की त्रिमूर्ति अंकित है।

11 वीं षताब्दी ई0 की काले पत्थर की काकूनी से प्राप्त एक अन्य सूर्य प्रतिमा 'संग्रहालय' में संरक्षित है जिसमें सूर्यदेव को कमलासन पर आसनस्थ अंकित किया गया हैं।[5] द्विभुजी कमलधारी देव के चरणों में घुटनों तक लम्बे जूते हैं। मस्तक पर किरीट मुकुट और वक्ष पर कवच है। मत्स्य पुराण[6] एवं अग्नि पुराण[7] के अनुसार सूर्य को हाथों में कमल लिये, सुन्दर नेत्रों से युक्त, रथ में आसनस्थ होना चाहिए। अग्नि पुराण के

अनुसार सूर्य द्वारा धारित दो कमल पुष्प प्रकाष एवं जीवन के द्योतक हैं।[8]

सूर्य प्रतिमा के विकास के साथ सूर्य की अन्य देवताओं के साथ समन्वित प्रतिमाएँ भी बनायी जाने लगी थीं। हिन्दू धर्म की त्रिमूर्ति–ब्रह्मा, विष्णु, महेष के साथ अलग–अलग तथा चारों के सम्मिलित रूप का निर्माण किया गया। धार्मिक–सहिष्णुता की परिचायक ये संयुक्त प्रतिमाएं हाड़ौती अंचल में बहुसंख्या में उपलब्ध हुई हैं जो राजकीय संग्रहालय, झालावाड़ में संग्रहित हैं। इन्हीं में से एक प्रतिमा में 'सूर्यनारायण' कमलासन पर स्थानक है।[9] झालावाड़ जिले की गंगधार तहसील के बेड़ला गॉव से प्राप्त 9वीं ष्षताब्दी ई. की भूरे पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा में देव की 6 भुजाएँ हैं। सामने की दोनों भुजाओं में कमल, ऊपरी बायीं भुजा में षंख तथा नीचे की वाम भुजा में चक्र धारित है। देव–वक्ष पर कवच तथा चरणों में लम्बे जूते है। उभयपार्ष्व मे सूर्यानुचर दण्डी एवं पिंगल है। देवमस्तक पर किरीट है तथा उसके ऊपर सर्पफण वितान है। सर्पफण वितान के दोनों ओर सूर्यपुत्र अष्वमुखी अष्विनकुमार अंकित हैं। भविष्य पुराण[10] एवं साम्ब पुराण[11] में सूर्य के दोनों ओर अष्विन कुमारों को अंकित किये जाने सम्बंधी उल्लेख मिलते हैं। प्रस्तुत प्रतिमा सूर्य तथा विष्णु के वैदिक कालीन अभिन्न स्वरूप[12] को अतिसुन्दर षैली मे प्रस्तुत करती हैं।

11वीं. ष्षताब्दी ई0 की काकूनी से प्राप्त एक अन्य मूर्ति संग्रहालय में सुरक्षित है[13] जिसमें सूर्य और षिव के संयुक्त रूप 'मार्तण्ड–भैरव' को प्रतिमा–रूप दिया गया है। प्रस्तुत प्रतिमा में 'देव' सप्ताष्वरथ पर आरूढ़ है। देवता के दोनों ओर सूर्य–पत्नियां ऊषा–प्रत्यूषा प्रदर्षित है। चर्तुमुखी देव के सामने के दोनों हाथों में कमल है तथा नीचे की दाहिनी भुजा में त्रिषूल तथा बायीं भुजा में सर्प है। सूर्य एवं षिव के संयुक्त भाव की प्रतिमा के संदर्भ में षारदा तिलक तंत्र नामक ग्रंथ मे विवरण मिलता है कि इस वर्ग की प्रतिमा में देवता को चतुर्भुज उत्कीर्ण किया जाना चाहिए।[14] षिव के प्रमुख आयुध त्रिषूल को धारण करने वाली सूर्य प्रतिमाओं का किंचित वर्णन विष्वकर्म षास्त्र नामक ग्रंथ में भी उपलब्ध है।[15] 'संग्रहालय' की एक अन्य संयुक्त प्रतिमा 'हरिहरमार्तण्ड पितामह' की है।[16] जिसमें सूर्य को विष्णु, षिव तथा बह्मा के साथ प्रदर्षित किया गया है। अष्टभुजी स्थानक देव के सामने के दोनों हाथों में गृहित कमल सूर्य के, माला एवं कमण्डलु बह्मा के, षंख विष्णु का और सर्प षिव का आयुध है। एक हाथ खण्डित तथा एक अन्य में दण्ड है। त्रिमुखी देव के मध्य मस्तक पर किरीट है। कुण्डल, कवच, मेखलादि से अंलकृत 'देव' के चरणों में लम्बे जूते हैं। मूर्ति–फलक के षीर्ष में अंधकार–नाष हेतु ष्षरसंधान किये हुए सूर्य पत्नियां ऊषा–प्रत्यूषा प्रदर्षित है। देव–मस्तक के दोनों ओर सूर्य की आसनस्थ प्रतिमाएँ हैं। चरणों के मध्य देवी महाष्वेता अंकित है। उक्त प्रतिमा मे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुख्य देवता सूर्य है। अन्य देवों के आयुधों के द्वारा प्रतीक रूप में सूर्य को उनकी ष्षक्ति से सम्पन्न प्रदर्षित किया गया है। झालावाड़ संग्रहालय की एक अन्य त्रिमुखी देव प्रतिमा है जो 10 वीं ष्षताब्दी ई0 की है। [17]

लाल पाषाण से निर्मित चतुर्भुजी देव प्रतिमा की चारों भुजाएँ खण्डित हो चुकी हैं। विभिन्न आभूषणों से विभूषित देव–वक्ष पर कवच है। 10 वीं ष्षताब्दी ई0 की एक अन्य संयुक्त प्रतिमा चन्द्रभागा से प्राप्त हुई है।[18] लाल पाषाण में निर्मित लगभग आदमकद इस प्रतिमा में त्रिमुखी 'देव' स्थानक है। अष्टभुजी देव की लगभग सभी भुजाएं खण्डित है।

चरणों में लम्बे जूते पहने 'देव' विविध आभूषणों से सज्जित है तथा उभय पार्श्व में अनुचर दण्डी–पिंगल है। लाल पाषाण की ही एक अन्य संयुक्त प्रतिमा काकूनी से प्राप्त हुई है।[19] 11वीं. षताब्दी ई0 की इस प्रतिमा में स्थानक देव की आठ भुजाएँ हैं। सामने की दोनों भुजाओं में कमल है। दाहिनी भुजाओं में त्रिषूल, दण्ड और माला गृहित है। बांयी भुजाओं में भिक्षापात्र, कमण्डलु एवं षंख है। सर्वाभरण विभूषित देवता के चरण आवृत है। उभय पार्श्व में अनुचर दण्डी–पिंगल तथा पत्नी राज्ञी एवं निक्षुभा है। झालरापाटन से प्राप्त 8वीं. एवं 9वीं ष्षताब्दी ई0 की एक अन्य देव प्रतिमा बलुआ पत्थर से निर्मित है।[20] स्थानक 'सूर्यदेव' की आठ भुजाएँ हैं जिनमें गृहित आयुध ब्रह्मा, विष्णु तथा षिव के साथ उसकी एकात्मकता प्रदर्षित करते है। प्रतिमा में देवता के आयुध एवं आभूषण काकूनी से प्राप्त उक्त संयुक्त प्रतिमा के समान ही हैं।

इस प्रकार झालावाड संग्रहालय की सौर–प्रतिमाएँ हाड़ौती क्षेत्र में प्राचीन कालीन सूर्योपासना, उच्चकोटि की मूर्तिकला एवं सांस्कृतिक परम्पराओं पर पर्याप्त प्रकाष डालती है और अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

संदर्भ

1. राजकीय संग्रहालय, झालावाड, मूर्ति संख्या–337
2. श्रीवास्तव, वी.सी., सनवर्षिप इन एंषियेंट इण्डिया, पृ0 311
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, खण्ड–3, अध्याय–67
4. मूर्ति संख्या–10
5. मूर्ति संख्या–242
6. द्रष्टव्य, हाजरा,आर.सी., स्टडीज इन द पौराणिक रिकॉर्डस ऑन हिन्दू राइट्स एंड कस्टमस, पृ0 182
7. अग्नि पुराण, अध्याय–51
8. द्रष्टव्य, पाण्डेय, एल.पी., सनवर्षिप इन एंषियेंट इण्डिया, पृ0 140
9. मूर्ति संख्या–6
10. द्रष्टव्य, पाण्डेय, दुर्गाप्रसाद, सूर्य,एन आइक्नोग्राफिकल स्टडी ऑफ इण्डियन सन गॉड, पृ0 33, टिप्पणी संख्या'15
11. साम्बपुराण, 29, 18
12. रायचौधुरी, एच.सी., अर्लीहिस्ट्री आफॅ दि वैश्णव सैक्ट, पृ0 67, सरकार, डी.सी., दि कल्चरल हैरिटेज आफॅ इण्डिया, पृ0 108, 9
13. मूर्ति संख्या–20
14. अग्रवाल,आर. सी. ''राजस्थान की प्राचीन मूर्तिकला में सूर्यनारायण तथा मार्तण्डभैरव प्रतिमाएँ'', षोध पत्रिका, अंक–4, पृ0 3
15. राव, गोपीनाथ, एलीमेन्टस आफॅ हिन्दू आइक्नोग्राफी, भाग–1, खण्ड–2, परिषिश्ट–सी. पृ. 86
16. मूर्ति संख्या–339
17. मूर्ति संख्या–341
18. मूर्ति संख्या–42
19. मूर्ति संख्या–265
20. मूर्ति संख्या–85

Copyright © 2014, Dr. Anita Surana. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.